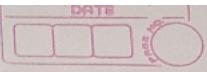


Name = Vandana  
Roll no. = 55  
Date = 6/11/20

Class = XII - A  
Subject = Hindi



- प्र०.५ (ख) • उषा कविता में चक्षु बिम्ब निहित है। कविता में नीले नम्र को राख से लिये गीले चौंके के समान बताया गया है।  
• दूसरे बिंब में उसली तुलना काली सिल से की गई है जिसको लाल केसर से अभी-अभी धोया गया है।  
• तीसरे बिंब में स्लेट पर लाल खड़िया चाक का उपमान है।  
• प्रातः कालीन सौंदर्य क्रमशः विकसित होता है। दूरी दूरी लालिमा भी समास हो जाती है और सुबह का नीला आकाश नील जल का आभास देता है।

(ग) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में दूरदर्शन पर एक अपाहिज व्यक्ति को प्रदर्शन की वस्तु मान उसके मन की पीड़ा को कुरेदा जाता है। साक्षात्कारकर्ता इसके स्वार्थ के कारण अंदर बन गए हैं जिससे कसणा जेगाने के मकसद से शुरू किया गया कार्यक्रम क्षर बन गया है। ऐसा लगता है कि दूरदर्शन कार्यक्रम से जुड़े लोग संवेदनहीन हो गए हैं। वे बिना किसी लोक-मर्यादा के किसी का पायदा उठाने में नहीं चूकते हैं।

- प्र०.५ (क) लैखक वर्च्चों की टौली पर पानी पैके पाने के विरुद्ध या लैकिन उसकी जीजी इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अंदाविश्वास नहीं है। यदि

हम इस इंटर सेना को पानी नहीं देंगे  
ले इंद्र देव हमें पानी कैसे देंगे । यदि  
परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे  
कुछ देना सीखो । तभी परमात्मा खुश होकर  
हमारी इच्छाएँ पूरी करेंगी। जिस प्रकार किसान  
खेत में फसल पाने के लिए पहले बीज  
बोता है रक्त तरह से वह अपने पार से कुछ  
बीज पहले खेत में फेंकता है उसी तरह हम  
अपने घर का पानी इन बट्टों की टौली पर फेंकते  
हैं। यही त्याग है, यही दान है।

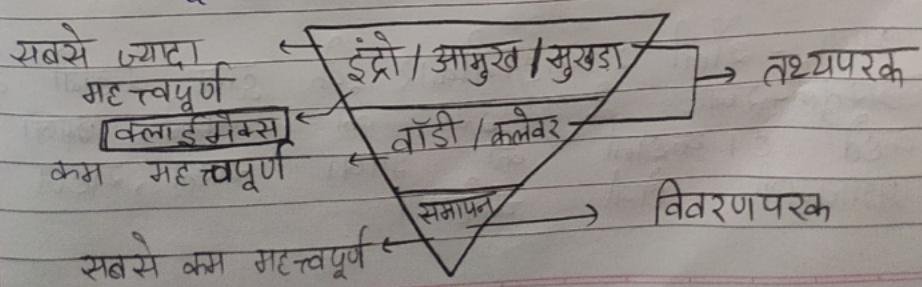
(ख) जब सारा गाँव भुखमरी और महामारी का दंश  
झौल रहा था तब ढोलक की आवाज गाँव के  
लोगों के लिए संजीवनी का काम कर रही थी।  
ढोलक की आवाज से लोगों की कैपन शक्ति  
रहित रहों में बिजली टैंड जाती थी और ग्राण  
त्यागते प्राणियों को तकलीफ़ नहीं होती थी। वे  
मौत से डरते नहीं थे। उनके हृदय से मौत का  
कोई डर नहीं था। इस प्रकार रात भर  
पहलवान की ढोलक की आवाज गाँव में फैल  
सन्नाटे और भय के बातावरण को दूर कर  
गाँव की मौत से लैंडने की शक्ति प्रदान  
करती थी।

प्र० ६ (क) नन्हा बालक ऑंगन में चाँद पाने की किसी  
जिद्द करके बनावटी रोना रो रहा है। बाल-हृषि  
के का माँ सरल उपाय निकाल लैती है।  
वह उसके हाथों में दर्पण धमा देती है और  
दर्पण में क्षचाँद का प्रतिबिम्ब दिखाकर कहती  
है कि आकाश से चाँद उसके दर्पण में  
ही आ गया है।

- ख** • रुबाई छंद उट्टू - फारसी का छंद है। इसमें पहली, दूसरी व तीसरी पंक्ति में तुकबंदी होती है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है।
- काल - आधुनिक काल
  - भाषा में हिन्दी, उट्टू व लोकभाषा का अनुठा सम्बन्ध है।
  - वात्सल्य रस की सुंदर अभिव्यक्ति है।
  - छंद - मुक्त छंद
  - स्टीक, सार्थक बिंब योजना
  - स्वर मैत्री व पद मैत्री का सुंदर सम्बन्ध
  - भावानुकूल शब्द चयन
  - अ माधुर्य गुण सम्पन्न भाषा है।

**प्र० ७** समाचार उल्टा पिरामिड शैली में लिखा जाता है।  
सुविधा की दृष्टि से इसे उ भागों में विभाजित किया गया है।

- 1) इंट्रॉ या मुख्यः :- इसके अंतर्गत सबसे महत्वपूर्ण तथ्यों, सूचनाओं एवं जानकारी को लिखा जाता है। इंट्रॉ में समाचार के संबंध में क्या, कब और कहाँ, कौन चार प्रश्नों के उत्तर देना आवश्यक होता है।
- 2) वॉडी या क्लैवर :- कम महत्वपूर्ण जानकारी का लेखन इस अनुच्छेद में किया जाता है। इसमें क्यों और कैसे का जवाब देने की कोशिश की जाती है।
- 3) समापन : सबसे कम महत्वपूर्ण होता है। इसमें विवरण परक सूचना दी जाती है।



प्र० ४ कहानी के प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं।

(i) कथानक :- कथानक कहानी का केंद्रीय बिंदु हो जिसमें प्रारंभ से अंत तक कहानी की सभी घटनाओं/पर्यावरणों का उल्लेख होता है। कहानी की रचना के कथानक के बारे जाता है।

(ii) हंदू :- हंदू कथानक को आगे बढ़ाता है तथा कहानी में रीचकता बनार रखता है।

(iii) देशकाल और वातावरण :- प्रत्येक घटना, पात्र, संग्रह का अपना देशकाल और वातावरण होता है। कहानी में वास्तविकता का पुत लाने के लिए देशकाल और वातावरण का प्रयोग किया जाता है।

(iv) पात्र एवं चरित्र-चित्रण :- कहानी का संचालन उसके पात्रों के द्वारा ही होता है। पात्रों के गुण दौषक की उनका चरित्र - चित्रण कहा जाता है। प्रत्येक पात्र का अपना स्वरूप, स्वभाव और उद्देश्य होता है।

(v) संवाद : कहानी के पात्रों द्वारा किए गए विचारों की अधिव्यक्ति को संवाद कहते हैं।

(vi) चरमोत्कर्ष : जब कहानी पढ़ते-पढ़ते पाठक को उसके पराकाष्ठा पर पहुंच जार, तब उसे कहानी का चरमोत्कर्ष कहते हैं।

(vii) भाषा - शैली : कहानीकार के द्वारा कहानी के प्रस्तुतीकरण के द्वंग को उसकी भाषा - शैली कहते हैं। कहानी की भाषा सरल, सहज तथा प्रभावमयी होती है।

(viii) उद्देश्य : प्रत्येक कहानी किसी न किसी उद्देश्य को लेकर लिखी जाती है। अतः उद्देश्य कहानी का एक अनिवार्य तत्व है।

प्र० ७ के तुलसीदास अपने युग की आधिक - सामाजिक परिस्थितियों से परिचित थे।

- पहले छंद में उन्होंने दिखलाया है कि संसार के समस्त जीला प्रपञ्च का आधार पेट की आग का दारूण है।
- दूसरे छंद में प्रकृति और शासन की विषमता से अजी बैकारी व गरीबी की पीड़ा का यथार्थपरक चित्रण करते हुए उसे दशानन से उपमित करते हैं।
- उन्होंने पेट की आग की समुद्र की आग से भी बड़ा बताया है।
- गरीबी की रावण ने सबको दुखी कर रखा है।

(ix) भवित्व में दुर्गुणों का जुझाव नहीं था। वह सेवा भाव में हनुमान को पीछे छोड़ती थी, घैरलू कार्यों में भी वह दक्ष थी और शिष्टाचार उसके व्यवहार में चार-चाँद लगाता था परंतु इन्हें सद्गुणों के हीते हुए भी कहु उसमें कई अवगुण थे। वह अन्धाने में ही अस्त्याचरण कर बैठती थी। रूपये - पैसे भी वह एक जगह रक्त करती थी जिसकी जानकारी लैखिका को भी नहीं थी। वह किसी को भी आद्ये - अध्यरु ज्ञान के बल पर शास्त्रार्थ में चुनाती देती थी।

प्र०३ कविता लेखन के आवश्यक तत्व निचं लिखो हैं।

- ① शब्द : कविता, लेखन का पहला व प्रमुख तत्व शब्द ही होता है। शब्दों के मैलजोल से ही कविता बनती है।
- ② बिंब : बिंब कविता को इंट्रियों से पकड़ने में सहायक होता है। कविता की स्थना की शुरुआत में दृश्य व अव्य बिंब की संभावना होती है।
- ③ छंट : इस छंट अर्थात् आंतरिक लय। कविता लिखने से पूर्व छंट की बुनियादी ज्ञानकारी अत्यंत आवश्यक है।
- ④ परिवेश : कविता के उपर्युक्त सभी तत्व परिवेश और संदर्भ से परिचलित होते हैं। कविता की भाषा, बिंब, छंट सभी परिवेश के इस द्वारा गठित होते हैं।
- ⑤ आव : कवि की वैयक्तिक सौच, दृष्टि और दुनिया का नज़रिया कविता की आव संपदा बनता है।

प्र०२ प्रेषक

फ. ख. ग.

रा - १३३, पी - ३

ग्रेटर नोरडा, उत्तर प्रदेश

परीक्षा भवन

दिनांक - ०५ अक्टूबर, २०२०

सेवा में

मुख्य अधिकारी

प्रदूषण नियंत्रण विभाग  
ग्रेटर नोरडा, उत्तर प्रदेश

विषय :- नदी दूषित होने के संदर्भ में

महोदय,

में इस पत्र के माध्यम से आपका

इयाने क्षेत्र में रिचर्ट औद्योगिक संस्थान द्वारा गंदा पानी बहारा जाने की और दिलाना चाहती है। यह गंदा पानी नदी के जल को दुषित कर रहा है। इस कारण नदी के जीवों की मृत्यु हो रही है। सच्ची से यह गंदा पानी जल प्रदूषण को बढ़ावा दे रहा है। हमने कई बार आपके विभाग को का ध्यान आकर्षित किया परन्तु उसका कोई असर नहीं हुआ।

अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि इस हस्त समस्या पर ध्यान दे तथा इसका जल से जल्द कोई उपाय निकाले।

आशा है आप इस समस्या को गंभीरता से समझेंगे।

धन्यवाद  
अवधीय  
क. ख. ग.

प्र०। जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कहि।

सूर्य की किरणें हर तरफ पैलती हैं। परंतु जहाँ सूर्य की किरणें का पहुँचना भी मुश्किल है। वहाँ तक कहि की कल्पनारा पहुँच सकती है। कल्पना की शक्ति की कोई सीमा नहीं होती है। कल्पना से हम जहाँ चाहे वहाँ जा सकते हैं।